CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

[Conference Special-NTMAE-24]

सक्रिय एवं अनुभवजन्य अधिगम की आवश्यकता महत्व एवं क्रियान्वयन

डॉ. सुमन लता यादव
सहायक आचार्य
संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय जयपुर
Email – guddukaku81@gmail.com, Mobile - 8112218599

First draft received: 14.05.2024, Reviewed: 29.05.2024, Final proof received: 20.06.2024, Accepted: 27.06.2024

सारांश

प्रस्तुत लेख अनुभवजन्य अधिगम का अर्थ आवश्यकताक्रियान्वयन व इसके परिपेक्ष में विभिन्न शैक्षिक ,महत्व , चिंतकों के चिंतन को दर्शाता है। अनुभवजन्य अधिगम से तात्पर्य है स्वयं के अनुभव द्वारा सीखना यह व्यक्तिगत सीखने की प्रक्रिया है आज विश्व में प्रायोगिक कार्यकी आवश्यकता को महसूस किया गया है संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक दशाबिद में शैक्षिक विकास के लिए यूनेस्को ने टीचिंग लर्निंग फॉर ए सस्टेबिल फ्यूचर कार्यक्रम में अधिगमकर्ताओं को अनुभवों के द्वारा सीखने पर बल दिया गया है शैक्षिक चिंतक स्वामी विवेकानंद ने अधिगम की अवधारणा में जीवन के अनुभवों पर अत्यधिक जोर दिया है डेविड कोल्व ने अनुभव पर आधारित चार शैलियाँ बताई हैं कक्षा में शिक्षक की मार्गदर्शन में विषय एवं परिस्थिति के अनुसार अनुभवजन्य अधिगम की वयूह रचनाओं को का उपयोग कर शिक्षक को अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है.

मुख्य शब्द: *अनुभवजन्य अधिगम, व्यावहारिक ज्ञान आदि.*

परिचय

अनुभवजन्य अधिगम का अर्थ है अनुभव से सीखना अनुभवजन्य अधिगम व्यक्तिगत सीखने की प्रक्रिया है अनुभवजन्य अधिगम के अंतर्गत सक्रिय अध्ययन जैसे अभिनय द्वारा सीखना साहसिक कार्यक्रम करना सीखना स्वतंत्र रूप से चयन करना सीखना सहकारी अधिगम और सेवा करने के साथ पढ़ने से संबंधित है इसकी शुरुआत 1970 में हुई डेविड के अनुसार अनुभवजन्य अधिगम व्यक्ति के सीखने की क्रिया पर केंद्रित होता है अनुभवजन्य अधिगम शिक्षक की अनुपस्थिति में भी हो सकता है के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिए दो तत्वों का होना आवश्यक है जिसमें व्यक्तिक और वातावरण शामिल है कोलभ का कहना है कि अनुभव से वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक विद्यार्थी में यह चार क्षमताएं होना आवश्यक है विद्यार्थी सक्रिय रूप 1 2 से अनुभव में शामिल होने के लिए तैयार होना चाहिए विद्यार्थी अनुभव पर प्रतिबिंब करने के लिए सक्षम होना चाहिए विद्यार्थी को मानव धारण करने के लिए विश्लेषण 3 विद्यार्थी में 4 आत्मक कौशल का उपयोग करना चाहिए अनुभव से प्राप्त नई पिक्चरों का उपयोग करने के लिए निर्णय लेने और समस्या को सुलझाने के कौशल होने चाहिए

अनुभवजन्य अधिगम की आवश्यकताकिसी भी विषय का - व्यावहारिक ज्ञान अकैडमी उत्कृष्ट से अधिक महत्वपूर्ण है हमें साथ-शैक्षणिक ज्ञान की साथसांसारिक कौशल सीखने की भी आवश्यकता है जिससे कि हम सफल हो सके और समाज का सही दिशा में मार्गदर्शन कर सकें नई शिक्षा नीति मूलतः इसी पर बनी है राष्ट्रीय शिक्षा नीति का लक्ष्य स्कूलों में अनुभव आत्मक शिक्षण अभ्यास करना है जहां छात्र सक्रिय रूप से शामिल होकर विचारों का आदानप्रदान करते हैं और - अभ्यास करके सीखते हैं अधिगम जाने अनुभव अंतर्गत के अंतर्गत पाठ को वास्तविक दुनिया की समस्याओं से जोड़कर छात्र संलग्न होकर सीखते हैं जहां शिक्षक छात्रों को निर्देशित करने की बजाय उन्हें सुविधा प्रदान करती हैं यह बच्चों को अधिक रचनात्मक और नवोनमेष खुद को अभिव्यक्त करने में सक्षम बनाता है जो कि वर्तमान समय की जरूरत है यह बौद्धिक भावात्मक सामाजिक और शारीरिक स्तर पर जुडता

है जिसके परिणाम स्वरुप सीखना व्यक्तिगत और लंबे समय तक चलने वाला होता है अतः स्थाई ज्ञान के लिए अनुभव से सीखना महत्वपूर्ण होता है

अनुभवजन्य अधिगम का महत्वस्वयं करके सीखने की - प्रक्रिया में सफलता से ज्यादा महत्वपूर्ण असफलता होती है जो सिखाने वाले को समझकी गहराइयों में ली जाती है हमारी परंपरागत शिक्षा व्यवस्था असफलता को अच्छी नजर से नहीं देखती है परिणाम स्वरुप बच्चे गलतियां छुपाने की कोशिश करते हैं और गलत हो जाने के पर सीखने से वंचित रह जाते हैं वैसे तो यह सभी हर विषय पर लागू होता है लेकिन स्कूली शिक्षा में विज्ञान की पहचान एक कठिन विषय के रूप में होती है विज्ञान वास्तविक चीजों का घटनाओं के पीछे छुपे कारकों को अनावृत करने का एक जरिया है सही समझ हासिल करने के लिए उनके साथ सीधे सामना करना पड़ता है उदाहरण के लिए मिट्टी की किस्म के बारे में जानना है तो विभिन्न प्रकार की मिट्टियों को देखे हुए बगैर शब्दों के बल पर उन्हें नहीं समझा जा सकता है लिखे हुए शब्द केवल सूचना देती हैं सूचना से हमें ज्ञान नहीं होता है अनुभूति के लिए वास्तविक अनुभव की जरूरत होती है इसलिए विज्ञान की समझ पाने के लिए वास्तविक अनुभव करना जरूरी है

अनुभव अधिगम के आधारों की समझ- डेविड कोल्व ने अनुभवजन्य अधिगम के आधारों की विवेचना करते हुए बताया कि-

1अधिगम क्रिया करके सीखने के सिद्धांत पर आधारित है.

यह अधिगम छात्रों के जीवन के वास्तविक अनुभवों के 2 द्वारा कौशलों को विकसित करता है

अनुभव अधिगम के अंतर्गत 3 सभी इंद्रियों के प्रयोग से अधिगमकर्ता को बहू इंद्रिय अनुभव प्राप्त होती है

इस अधिगम में अधिगमकर्ता शिक्षण प्रक्रिया को निर्देशित 4 करता है अनुभव करता है पर्यवेक्षक करता है चिंतन करता है प्रयोग या व्यवहार में लाता है और कार्यान्वित करता है

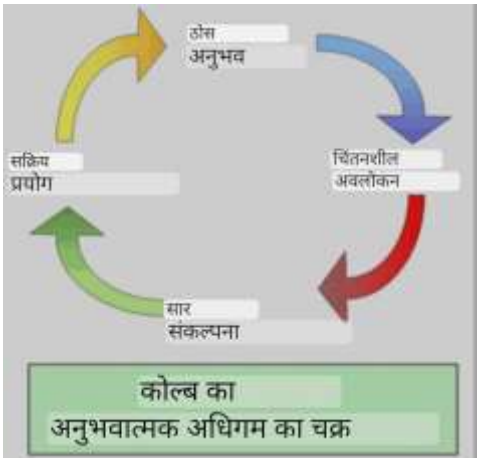

अनुभवजन्य अधिगम चक्र की अवस्थाएं– कॉल्ब ने इसकी चार अवस्थाएं बताई है 1मूर्त अनुभव की अवस्था - अधिगमकर्ता को सभी इंद्रियों के द्वारा अनुभव प्राप्त करने में चिंतनीय 2 सबके रूप से भाग लेने की आवश्यकता होती है अधिगमकर्ता पूर्व -पर्यवेक्षक की अवस्थास्थिति पर विचार कर वर्तमान अनुभवों को अपने पूर्व अनुभवों से जोड़कर उनसे संबंध स्थापित करता है इस -अमूर्त संबोध की अवस्था 3 अवस्था में अधिगमकर्ता सूचनाओं को एकत्रित कर विश्लेषण का निष्कर्ष निकालता है-4 सक्रिय प्रयोग की अवस्था- इस अवस्था में अधिगमकर्ता ने जो सीखा, उसका प्रयोग करता है

अनुभवजन्य अधिगम की व्यूह रचनाएं- 2 भूमिका निर्वाह 1 5वीडियो प्रोजेक्ट 4 फिल्म और डॉक्युमेंट्रीज 3 क्षेत्रीय यात्राएं 7 पोर्टफोलियो 6 अतिथि वक्ताकला आधारित क्रियाएं छात्रों 8 खेल और 10 सहपाठी अनु वर्ग 9 द्वारा सामूहिक अधिगम पहेलियां

अनुभवजन्य अधिगम के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक चिंतकों का चिंतन –

1**स्वामी विवेकानंद** ने अधिगम की अवधारणा में जीवन के अनुभवों पर अधिक बल दिया है उनके अनुसार व्यक्ति को स्वयं अपने परिश्रम से ज्ञान की खोज करनी है ज्ञान मन में निहित है केवल उसे खोजने और जागृत करने की आवश्यकता है स्वामी विवेकानंद ने पाठ्यक्रम में क्रियात्मक कार्यों को सम्मिलित करने पर विशेष रूप से बल दिया है

2- **रविंद्र नाथ टैगोर** का कहना है की पुस्तक के स्थान पर जहां तक संभव हो सके बालकों को प्रत्यक्ष स्रोतों से ज्ञान प्राप्त करने के अवसर दिए जाने चाहिए जिससे कि वह अपनी रचनात्मक शक्तियों को विकसित कर सके बालक क्रिया करके रचना करके सृजन करके खोज करके ही सच्चा ज्ञान प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं

3- **जय कृष्णा मूर्ति** के अनुसार शिक्षा का कार्य बालकों में संचेतना और उद्यमिता का विकास करना है और यह तभी हो सकता है जब बालक का आविष्कार करने खोज करने तथा शोध करने में समर्थ हो सके इसके लिए उन्होंने कहा कि शिक्षा में बालक को अनुभव के द्वारा सीखने पर प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए

4- **गांधीजी**शिक्षा के क्षेत्र में गांधी जी ने गांधी जी ने क्रिया - पर सबसे अधिक बल दिया उनके अनुसार करके सीखना और स्वयं की अनुभव से सीखना ही उत्तम सीखना होता है

अनुभवजन्य अधिगम का क्रियान्वयन –1 यूनेस्को और अनुभवजन अधिगम का क्रियान्वयन -1 यूनेस्को और अनुभवजन्य अधिगम आज विश्व में -प्रायोगिक महत्व को समझा गया है संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक दशाब्दी में शैक्षिक विकास के लिए यूनेस्को ने टीचिंग एंड लर्निंग फॉर ए सस्टेनेबल फ्यूचर नाम से एक कार्यक्रम आरंभ किया जिसके द्वारा अधिगमकर्ताओं को अनुभव के द्वारा सीखने पर बल दिया

गया है अनुभवजन्य अधिगम मानव संसाधन विकास 2 की परिपेक्ष 2005 मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा में छात्रों के कार्यों पर 2005 राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा - में आधारित अधिगम अनुभवों पर विशेष बल दिया गया है जिससे वे स्वतंत्र रूप से चिंतन करने और कार्य करने के प्रेरित हो

निष्कर्ष

निष्कर्षतः अनुभवजन्य अधिगम के द्वारा छात्र करके खोजने, प्रतिबिंब करने और लागू करने के माध्यम से छात्र उन अनुभवों के माध्यम से, सीखते हैं जो प्रशिक्षक की तुलना में उन पर अधिक केंद्रित होते हैं तथा वास्तविक दुनिया से मुद्दों और प्रक्रियाओं का जवाब देने और उन्हें हल करने से छात्र इन अनुभवों के साथसाथ संचार कौशल और आत्मविश्वास - के माध्यम से अपनी निर्णय लेने की क्षमताओं का निर्माण वृद्धि करते हैं यह अवधारणा राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने पर स्कूलों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित हो सकेगी जिससे कि एक प्रभावी शिक्षण विधि द्वारा शिक्षण किया जा सकेगा.